सुधा गोयल

अपना घर

एक वृद्धा मंदिर की सीढ़ियों पर काफी देर से बैठी है।दीपक जलाकर बुझ रहे हैं। दर्शनार्थी भी लौट रहे हैं। मंदिर के कपाट बंद होने वाले हैं। पुजारी ने निकट आकर सस्नेह कहा-

"माताजी, मंदिर के कपाट बंद होने वाले हैं।आप भी अपने घर जाओ।किसी का इंतजार कर रहीं हैं क्या?"

वृद्धा ने नजर उठाकर पंडित को देखा फिर पूछा-"भगवान का घर भी अपना नहीं । फिर कहां ठौर मिलेगी?पिता ने एक अजनबी के साथ यह कहकर भेज दिया कि अब तुझे इसी के साथ रहना है, जैसे भी रखें"।पिता की बात मान कर चली गई।एक दिन उसने भी घर से बाहर निकाल दिया।जवानी के दिन थे।मेहनत मजदूरी कर पेट पालने लगी। एक दिन वह बीमार पड़ा।सेवा कराने के लिए लिए गया।अब पुत्र ने निकाल दिया।औरत का कोई घर नहीं होता।आप तो ज्ञानी हैं।आप ही बताएं कहां जाऊं।"

पंडित जी धर्मसंकट में पड़ गए।बोले-"माताजी,आज की रात मेरे साथ घर चलो।कल आपकी व्यवस्था कर दूंगा।"

अगले दिन पंडित उसे लेकर एस.पी.आफिस पंहुच गये और एस.पी.के सामने प्रस्तुत कर समस्या बताई।उसका मुहर्रिर समस्या को शब्द बद्ध करता रहा।जब बात समाप्त हो गई तो उस महिला का नाम लिखा और नीचे अंगूठा लगवा लिया।

आधा घंटे बाद उस महिला का पति और पुत्र रोते गिड़गिड़ाते थाने में खड़े थे। महिला यह चमत्कार देखकर अचंभित थी।तभी एस.पी.ने उस महिला से कहा-"माताजी,अब आप अपने घर में रहे।अब आपको कोई घर से नहीं निकालेगा।इन दोनों में से कोई परेशान करे तो मुझे बताना।और हां आपको हर महीने दो हजार रुपए गुजारे के लिए मिलेंगे।अभी के लिए रखो"-अपनी जेब से रुपए निकालकर दिए।वह महिला चमत्कृत थी।उसके हाथ श्रद्धा से जुड़ गए।